International Referred Research Journal, September, 2011. ISSN- 0974-2832, RNI-RAJBIL 2009/29954; VoL.III *ISSUE-32

शोध पत्र- हिन्दी

युगद्रष्टा तुलसीदास

* डॉ. परितोष बैलगो

* ब्लॉक ए, सैट न. 2, पत्रकार भवन, संकटमोचन, शिमला

September, 2011

भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ;मनुस्मृति, 12.97 उत्तर्राद्धः यह उक्ति तुलसी साहित्य के सम्बंध में भी चरितार्थ होती है अर्थात् तुलसी काव्य सभी कालों में प्रासंगिक बना रहेगा।[1] तुलसी का जीवन दर्शन सत्यद्रष्टा और सौन्दर्य स्रष्टा का दर्शन है, जो प्रेम, सौन्दर्य के माध्यम से श्रेयमय चरम सत्य की अनुभूति और अभिव्यक्ति करता है। यह एक भक्त ऋषि का दर्शन है, जो कोरे बौद्धिक, विचारक और मतवादी चिंतक के जटिल ऊहापोह और मानसी विकल्पों के प्रपंच से परे चराचर व्यापिनी मंगलमय परम सत्ता के चिद्विलास का साक्षात्कार करता और कराता चला है।[2] तुलसी के व्यक्तित्व का सर्वांश राम के प्रेम से भीगा हुआ था– वे सिर से पैर तक राममय थे।[3] हिन्दी साहित्य के इतिहासकार सर जार्ज ग्रियर्सन ने कहा– मैं तुलसीदास को समस्त भारतीय साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व मानता हूं।[4] रामचरितमानस का तुलसी साहित्य में ही नहीं पूरे हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इसी के कारण तुलसीदास को प्रचुर ख्याति मिल सकी है। इसका महत्व इसी से आंका जा सकता है कि शायद ही कोई ऐसा हिन्दू परिवार हो जहां रामचरितमानस की प्रति न हो। इसमें चित्रित जीवन के आदर्श और मूल्य ही एक हिन्दू के आदर्श जीवनमूल्य होते हैं।[5] तुलसीदास ऐसे कवि थे कि उनकी कविता उनके अन्तश्चेतन का सुफल है। वह ऐसे कवि हैं जो कभी पुराने नहीं पड़ते, चिरनवीन बने रहते हैं। उनकी यह नवीनता उनकी हर अगली रचना में झलकती है। यही उनकी कविताश्री की विशेषता है।[6]

तुलसीदास शुद्ध हृदय, साधु, ऋषि, तत्वद्रष्टा, समाज सुधारक और मानव समाज से ही नहीं वरन् सम्पूर्ण जीवधारियों से स्नेह करने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज की अनेक समस्याओं को युग–युग की समस्याओं के रूप में देखकर उन्हें शाश्वत रूप से सुलझाने का प्रयत्न किया था। निर्गुण–सगुण, शैव–वैष्णव, अवतारवाद तथा लोकजीवन की समस्याओं और विवादों को दूर किया।[7]आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तुलसी व्यक्तित्व और महत्त्व के सम्बंध में लिखते हैं –कि तुलसीदास का महत्त्व बताने के लिये विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनामूलक उक्तियों का सहारा लिया है। नाभादास ने इन्हें कलिकाल का वाल्मीकि कहा, स्मिथ ने मुगलकाल का सबसे बड़ा व्यक्ति माना, ग्रियर्सन ने बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा और यह तो बहुत लोगों ने बहुत बार कहा कि उनकी रामायण भारत की बाइबिल है। इन उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे।[8] तुलसी ने रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के आदर्शों को जनता के सामने प्रस्तुत कर विघटित एवं वि शृंखलित हिन्दू समाज को केन्द्रित किया। उनके राम सृष्टि के कण–कण में व्याप्त हैं, वे सभी के लिये उसी प्रकार सुलभ हैं, जिस प्रकार अन्न और जल– निगम अगम, साहब सुगम राम सांचिली चाह। अम्बु असन अवलोक्ति सुलभ सबहि जग माह।[9]

तुलसीदास का रामचरितमानस सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। लोक मर्यादा की स्थापना के लिये इससे उत्तम ग्रन्थ न तो हिन्दी में पहले लिखा गया था और न उसके बाद लिखा गया। तुलसी के अन्य ग्रन्थ भी भक्ति, प्रेम और समन्वय की दृष्टि से उच्च कोटि के हैं। शैव, वैष्णव, शाक्त आदि सम्प्रदायों के आभ्यन्तर वैमनस्य को दूर करने का जैसा स्वस्थ एवं संयत प्रयास तुलसी ने काव्य के माध्यम से किया, वैसा हिन्दी साहित्य के इतिहास में कभी नहीं हुआ। काव्य रूपों की दृष्टि से भी उन्होंने अपनी प्रतिभा और मेधा का परिचय दिया।[10] तुलसी का जीवन–दर्शन प्राचीन वैदिक ऋषियों एवं मुनियों के उस विराट् आदर्श से प्रेरणा ग्रहण करता है जो अभ्यूदय और निःश्रेयस के संसिद्धिकारी धर्म चेतना के संरक्षण के प्रति निष्ठावान रहा है। नानापुराण निगमागमसम्वत उनका 'रामचरितमानस' इसी भव्य जीवन दर्शन का मूर्तिमान बिम्ब है।[11] तुलसीदास कवि, पंडित–सुधारक, लोकनायक और भविष्य स्रष्टा थे। यही कारण था कि उन्होंने सब ओर से समता की रक्षा करते हुए एक अद्वितीय काव्य की सृष्टि की जो अब तक भारत का दर्शक रहा है और उस दिन भी रहेगा जिस दिन नवीन भारत का जन्म हो गया होगा।[12] विष्णुकांत शास्त्री 'श्रद्धांजलि' कविता में तुलसी जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हैं कि–

जब तक जग में हिन्दी, हिन्दू, कवि, कविता।
तब तक गूंजेगी तेरी विमल कहानी।।[13]

रामचरितमानस राजमहलों से लेकर दीनहीन लोगों की झोपड़ियों तक में आदर और आनन्द से पढ़ी जाती है और पढ़ी जाती रहेगी।

जब तक नभ में रवि उग–उग कर ढल जाता
मुसका–मुसका कर निशि में शशि छिप जाता
जब तक सागर की लहरें उठ–उठ गिरतीं
जब तक मानव–मन में आशाएं घिरतीं
जब तक गंगा–यमुना में बहता पानी
तब–तक गूंजेगी तेरी विमल कहानी।[14]

इसमें सन्देह नहीं कि श्रेष्ठ साहित्य सभी युगों के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण और उपादेय होता है। उसका जीवन सन्देश कभी पुराना नहीं पड़ता। उसमें अभिव्यक्त भाव और विचार सदा प्रेरक ही बने रहते हैं। सुपठित साहित्यकार का अन्यतम वैशिष्ट्य यह होता है कि वह गौरवपूर्ण अतीत का आधार ग्रहण करते हुए भी

वर्तमान जीवन की समस्त गतिविधियों पर सूक्ष्म दृष्टि को आलोकित कर देता है। साहित्यकार या कवि अपने युग का मार्गद्रष्टा होता है। वह अपने युगीन समाज को दिशा बोध देता है तथा जीवन के मार्ग की कटु–विषम यथार्थताओं से परिचित कराता है। साथ ही आगे आने वाली पीढ़ियों को अपने युग का इतिहास सुनाता है। तुलसी का कलियुग आधुनिक युग पर पूर्णतया घटित होता है। तुलसी काव्य में आचरण का स्वरूप व्यावहारिकता पर आधारित हैं। तुलसी के काव्य में वर्णित वैयक्तिक आचरण, पारिवारिक आचरण एवं सामाजिक आचरण के आदर्श प्रत्येक युग के, प्रत्येक मानव के लिये जीवनोपयोगी है। तुलसी का मत है कि व्यक्ति का आचरण धर्म नीति सम्पन्न होना चाहिये।[15]

है याद हमें उस युग की जब तुम आए
भारत–नभ पर काले बादल थे छाए
हिन्दू–संस्कृति की दीप–शिखा बुझती थी
चिर–संचित हिन्दू मर्यादा लुटती थी
उस विकट समय के कर्णधार! हे ज्ञानी!
गूंजेगी ही यह तेरी विमल कहानी।[16]

मध्यकालीन इतिहास पर विचार करने से ज्ञात होता है कि अन्धकार कितना गहरा था। विक्रम की सोलहवीं शती में वीरगाथा काव्यों की परम्परा नीरस हो चुकी थी। उसकी धारा छोटे–छोटे रासो काव्यों में भटक कर रह गयी थी। सिद्धों और नाथों के दोहों की गति भी दूर तक न जा सकी। कबीर के निर्गुणवाद में बुद्धि को झकझोरने का मसाला तो था, पर हृदय को स्पर्श करने की शक्ति न थी। जायसी के प्रेम काव्य में हृदय का एक छोटा–सा कूतुहल अवश्य था, परन्तु व्यक्ति और समाज के जीवन का निर्माण करने वाले शक्तिशील आशावाद का उसमें पता न था। ऐसे समय आशा का नया सन्देश लेकर गोस्वामी तुलसीदास प्रकट हुए, गंगा की धारा जिस प्रकार गंगाद्वार में शैलराज हिमवन्त से उतरती हुई जलराशि को समेट लाती है, उसी प्रकार तुलसीदास ने भारतीय ज्ञान और साहित्य की समस्त तत्त्वानुभूति को समेटकर रामायण में भरा और लोक को उसे दिया।[17] मुगलों के आतंक के कारण जब ऐसा लग रहा था कि हिन्दू का विनाश होगा, लोगों को धर्म और संस्कृति के उदार तत्त्वों पर से विश्वास उठ रहा था, तब ऐसे संकट के काल में इस ग्रन्थ ने आस्था और विश्वास को बल दिया। समाज में विश्वास उत्पन्न करने का बहुत श्रेष्ठ कार्य रामचरितमानस ने किया और हिन्दू जीवन को बचाकर रखा।[18]

स्पष्ट है कि तुलसीदास की अमर कृति रामचरितमानस ने देश को बचा लिया, हिन्दुत्व की रक्षा की– क्योंकि तुलसी ने डंके की चोट पर उस जालिम जमाने में जब हिन्दू जनता का उत्पीड़न, धर्मांतरण हो रहा था– हिन्दू राजा अपनी बेटियां मुगल शासकों को दे रहे थे, घोषित किया कि जिसको राम से प्रेम नहीं, उसको करोड़ों दुश्मनों की तरह समझकर त्याग दो पिफर चाहे जितना तुम्हारा स्नेही प्रेमास्पद क्यों न हो। तुलसी के शब्दों में– जाके प्रिय न राम बैदेही। तजिये ताहि कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही।।[19]

तुलसी ने अपने युग को बहुत निकट से देखा और समझा था। तुलसीदास ने ऐसे समय में प्रत्यार्पण किया जब हिन्दू राजा पराजय स्वीकार कर विलासिता में डूबने लगे थे तथा प्रजा को उनके सहारे छोड़ दिया और प्रजा अपनी फरियाद ईश्वर से करने लगी तब तुलसीदास ने रामचरितमानस का निर्माण किया, जिससे उस युग में मानसिक दासता की शृंखला में जकड़ी हिन्दू जाति को नया मार्ग मिला। तुलसी ने लड़खड़ाती हिन्दू जाति को समता, सन्तोष, दया आदि के अतीन्द्रिय और उदात्त भावभूमि पर प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से राम के रूप में मानव के उत्कर्ष का चरम निदर्शन प्रस्तुत किया है।[20]

तुमने अपनों को अपनापन सिखलाया
तुमने अपनों को अपना पथ दिखलाया
तुमने अपनों को रोका 'पर' होने से
असली मणि तजकर नकली मणि ढोने से
भारत के हे कवि, गुरु, नेता लासानी
गूंजेगी ही यह तेरी विमल कहानी। [21]

महाकवि तुलसीदास परम नीतिज्ञ राजवेत्ता और राजनीति के पंडित थे। तत्कालीन मुस्लिम राज्य प्रणाली एवं शासन व्यवस्था की त्रुटियों के कारण संत्रास्त पीड़ित जनता के विक्षोभ की धारावाहिक प्रतिक्रियात्मक वाणी का उद्घोष उनकी कृत्तियों का मर्म है। वैभव और ज्ञान, प्रेम और धर्म, शास्त्रानीति और शस्त्रानीति के उच्चतम शिखर पर रहने वाली हिन्दू जनता कायिक और मानसिक दासता की लौह शृंखला में आबद्ध मुक्ति के लिये तड़प रही थी, परन्तु पारस्परिक मतभेद, फूट कलह और साम्प्रदायिक मतवादों के चक्कर से त्राण का कोई मार्ग नहीं मिल रहा था। ऐसे अंधकारपूर्ण समय में तुलसीदास ने संकटग्रस्त जनता का अपनी कृतियों द्वारा उद्बोधन कर पथप्रदर्शन किया एवं मानसिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक दासता से उसकी रक्षा कर वास्तविक स्वातंत्रय जीवन की प्राप्ति की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने का कार्य किया।[22] तुलसीदास के दार्शनिक दृष्टिकोण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह जीवन से विमुख नहीं हैं। वह लोकोन्मुख हैं, वह जीवन को सुखी और सार्थक बनाने के लिये। अनेक वैरागियों की तरह तुलसीदास मृत्यु के गीत नहीं गाते वरन् उनका दर्शन इसी जीवन, इस संसार में रहते हुए ही संसार के बन्धनों से मुक्त होने की बात कहता है।[23]

गोस्वामी तुलसीदास ने समन्वयवाद के द्वारा भारतीय समाज में एकता ला दी, उन्होंने समाज को एक माला में पिरो दिया। उनका यह समन्वयवाद बहुमुखी है। मोटे तौर से उनके समन्वयवाद को चार क्षेत्राों में बांट सकते हैं– दार्शनिक क्षेत्र, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्रा, सामाजिक तथा साहित्यिक क्षेत्र।[24] दार्शनिक क्षेत्रा में द्वैत और अद्वैत का समन्वय व निर्गुणी सगुण, ज्ञान–भक्ति का समन्वय, शैव–वैष्णव–शाक्त का समन्वय, शास्त्र–लोक, आदर्श–यथार्थ, सत्य और प्रेम लोक जीवन मोक्ष आदि। अतएव हम गोस्वामी तुलसीदास के विविध क्षेत्रों में परिव्याप्त समन्वयवाद का विश्लेषण करने पर इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इसके द्वारा उन्होंने तत्कालीन भारत में सांस्कृतिक एवम् धार्मिक एकता स्थापित की। साथ ही साथ इसके द्वारा

उन्होंने सामाजिक जीवन के लिये भक्ति का सुन्दर मार्ग प्रशस्त किया। यह भक्ति मार्ग तब से लेकर अब तक भारतीय जनता का एक जीवन दर्शन बना हुआ है। इसके द्वारा समाज के लोक–परलोक दोनों जीवन सुधरे साथ ही साथ देश की एकता की स्थापना और राष्ट्रभाषा के स्वरूप का विकास हुआ। यह समन्वयवाद आज भी भारतीय जनसमूह के लिये कल्याणकारी है।[25]

नित शैव वैष्णवों का झगड़ा बढ़ता था
हिन्दू मन पर तम का पर्दा पड़ता था
तुमने निज बल से 'मानस रवि' प्रकटाया
हो गई अमल हिन्दू समाज की काया
हम चिर–कृतज्ञ हे विनय–पत्रिका–दानी
गूंजेगी ही यह तेरी विमल कहानी।[26]

**आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में 'तुलसी समन्वयकारी थे– उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, गर्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और तत्त्वज्ञान का समन्वय, ब्राह्मण और चान्डाल का समन्वय, पाण्डित्य और अपाण्डित्य का समन्वय।'[27] तुलसी ने राष्ट्रीय एकता के लिये शैव–वैष्णवों का झगड़ा मिटाकर एक कर दिया। राम शिव की पूजा करते हैं और शिव राम की। तुलसी ने निगुरी–सगुन, ज्ञान–भक्ति, वैष्णव–शैव में समन्वय का अचूक प्रयास किया और एकता की दृष्टि से सांसारिक रिश्ते–नाते सभी रामभक्ति से जोड़ दिये।[28] समन्वय के प्रति तुलसीदास जी का आग्रह इतना प्रबल रहा है कि उनकी साहित्य साधना में भाषा, काव्य विधा, छन्द आदि दृष्टियों से भी विविधता में एकता है। उन्होंने प्रयोजनानुसार संस्कृत और लोकभाषा दोनों का प्रयोग समान अधिकार के साथ किया है। फिर, अवधी भाषा में रामचरितमानस और ब्रजभाषा में विनय पत्रिका की रचना कर तत्कालीन दोनों काव्य भाषाओं को गौरवान्वित करने का श्रेय भी तुलसी को प्राप्त है।[29] तुलसी एक महान स्रष्टा और जीवन द्रष्टा कवि हैं। इन्होंने मध्ययुगीन भारत की सम्पूर्ण चेतना को काव्यमयी वाणी दी है।[30] पूरे मध्यकाल में तुलसीदास शायद अकेले संत हैं जिन्होंने राम का नाम जपने पर जितना जोर दिया है, उतना ही जोर दिया राम का काम करने पर। 'राम काज लागे तब अवतारा' राम का काम करने के लिये ही तुम्हारा जन्म हुआ। राम का काम क्या है? तुलसी ने बताया है कि श्रीराम के अवतार के अनेक हेतुओं में एक प्रमुख है सज्जनों की पीड़ा हरना।[31] महामहोपाध्याय वागीश शास्त्री कहते हैं कि–श्रीरामचरितमानस केवल आध्यात्मिक ग्रन्थ ही नहीं है, यह उत्कृष्ट कोटि का काव्यामृत भी है। जीवन के सभी दिव्य पक्षों पर इसमें पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। मानव के समग्र व्यक्तित्व को विकसित करने वाले बहुमूल्य तत्त्वरत्नों से समृद्ध है यह सुक्ति सुधाकर है। व्यावहारिक आदर्शों की आधारशिला पर प्रतिष्ठित है श्रीराम कथा का विशाल भवन। इसलिये परिवार, समाज, प्रदेश तथा सम्पूर्ण राष्ट्र में सुख और शान्ति का प्रसार हो इस उद्देश्य से सुदूर पूर्ववर्ती देश धर्मान्तरित होने पर भी इस अनुकरणीय परम पावन चरित का अभिनय साभिनिवेश किया करते हैं। श्री रामनाम का प्रभाव ही ऐसा आकर्षक है। श्रीराम मन्त्रा के प्रभाव एवं श्रीरामचरितमानस के पारायण प्रताप से राष्ट्र को दासत्व से मुक्ति दिलायी श्रीरामचरित के अमर गायक सन्त तुलसीदास ने।[32]

राष्ट्रीयता का मूलभाव है राष्ट्र को सर्वोपरि समझना जननी जन्म भूमि को स्वर्ग–अपवर्ग से भी अधिक महत्त्व प्रदान करना। तुलसीदास जी की समकालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियां अत्यंत गम्भीर थी। उन सबका एक साथ समाधान करने के लिये असाधारण व्यक्तित्व का नेतृत्व परम अपेक्षित था। वैचारिक एकता राष्ट्रीयता की सबसे बड़ी शक्ति होती है। इसलिये तुलसी ने श्रीराम के मुख से परम पावन, अत्यन्त रमणीय और अनिर्वचनीय महिमामयी के रूप में व्यंजित कराकर राष्ट्रीय अखण्डता की अवधारणा को नया विस्तार प्रदान किया।[33]

ज्योति के अवतार पुंजीभूत गरिमा
चेतना साकार, संयममय मधुरिमा।
विनय के आगार, मर्यादा पुजारी
भक्ति के आधार, तुलसी, जय तुम्हारी।।[34]

तुलसी की अनुभूति इतनी व्यापक, संवेदनशील, सत्यकेन्द्रित तथा दायित्वचेतना से परिपूर्ण है कि वह सभी युगों के लिये परम ग्राह्य है। सत्य, सेवा, स्नेह, संवेदनशीलता, शुचिता, एकता, जागरुकता, करुणा, त्याग, परोपकार आदि उदात्त भावों का अक्षुण्ण स्रोत है तुलसी साहित्य। इन दिव्य भावों का कब और किस युग को प्रयोजन नहीं पड़ेगा? वस्तुतः तुलसी की प्रासंगिकता तब तक असंदिग्ध है, जब तक मानवमूल्यों के संरक्षण का प्रश्न प्रबल बना रहेगा।[35] मानव मूल्यों को व्यापक स्तर पर सुप्रतिष्ठित करने के महान उद्देश्य से रचा गया रामचरितमानस महाकाव्य लेखन का गौरव शिखर है।[36] युग द्रष्टा तुलसी ने भक्ति के मार्ग से मानव मूल्यों की ऐसी प्रतिष्ठापना की जो संपूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ 1.सीताराम झा 'श्याम', तुलसीदास साहित्य और दायित्वदर्शन, पृ. 204 2.इन्द्रजीत पाण्डेय, जुगल किशोर (सं.), तुलसीदास चिन्तन : अनुचिन्तन, पृ. 74 । 3.त्रिभुवन सिंह, तुलसी : सन्दर्भ और समीक्षा, पृ. 538 । 4.इन्द्रजीत पाण्डेय, जुगल किशोर (सं.), तुलसीदास चिन्तन : अनुचिन्तन, पृ. 126 । 5.विद्यानिवास मिश्र, तुलसी मंजरी, पृ. 87 । 6.वही, पृ. 87 । 7.भागीरथ मिश्र, महाकवि तुलसीदास युग संदर्भ, पृ. 219 । 8.शिव कुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृतियां, पृ. 208–209 । 9.विजयेन्द्र स्नातक, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 67 । 10.नागेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 271–72 ।11.देवकी नन्दन श्रीवास्तव, तुलसी साहित्य विमर्श, पृ. 16। 12.मोतीलाल द्वारी, तुलसी एक मूल्यांकन, पृ. 2। 13.विष्णुकांत शास्त्री, जीवन पथ पर चलते चलते,पृ. 43 । 14.वही, पृ. 43 । 15.चरणसखी शर्मा, तुलसी काव्य में धर्म व आचरण का स्वरूप, पृ. 267। 16. विष्णुकांत शास्त्री, जीवन पथ पर चलते चलते, पृ. 43 । 17.कला कुंज, गोस्वामी तुलसीदास अंक, जुलाई 2001, पृ. 15। 18.कौशलेन्द्र, अविस्मरणीय पूजनीय श्री गुरुजी, पृ. 24 । 19.कलाकुंज, गोस्वामी तुलसीदास अंक, जुलाई 2001, पृ. 21 । 20.चरणसखी शर्मा, तुलसी काव्य में धर्म व आचरण का स्वरूप, पृ. 148। 21.विष्णुकांत शास्त्री, जीवन पथ पर चलते चलते, पृ. 43। 22.राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, पृ. 204 । 23.इन्द्रजीत पाण्डेय, जुगल किशोर जैथलिया(सं.),, तुलसीदास चिन्तन : अनुचिन्तन, पृ. 58 । 24.भागीरथ मिश्र, महाकवि तुलसीदास युग संदर्भ, पृ. 150 25.वही, पृ. 158–59 । 26.विष्णुकांत शास्त्री, जीवन पथ पर चलते चलते, पृ. 44। 27.हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ. 85 । 28.चरणसखी शर्मा, तुलसी काव्य में धर्म एवं आचरण का स्वरूप, पृ. 102 । 29.सीताराम झा 'श्याम', तुलसीदास : साहित्य और दायित्व दर्शन, पृ. 165 । 30.शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृतियां, पृ. 212 । 31.त्रिभुवन सिंह, तुलसी : सन्दर्भ और समीक्षा, पृ. 417 । 32.वागीश शास्त्री, शाश्वत काव्य की आत्मा, पृ.114 । 33.सीताराम झा 'श्याम', तुलसीदास : साहित्य और दायित्व दर्शन, पृ. 166–167 ।34.विष्णुकांत शास्त्री, जीवन पथ पर चलते चलते, पृ. 44 । 35.सीताराम झा 'श्याम', तुलसीदास : साहित्य और दायित्व दर्शन, पृ. 211 । 36.सीताराम झा 'श्याम', तुलसीदास : साहित्य और दायित्व दर्शन, पृ. 224 ।